मौर्यकालीन आर्थिक व्यवस्था में किसानों की आर्थिक स्थिति

डॉ0 मनीष कुमार

समाज का उत्कर्ष मनुष्य के आर्थिक जीवन की सम्पन्नता, समुन्नति और सुख सुविधा पर निर्भर करता है। व्यक्ति का भौतिक एवं लौकिक सुख उसके आर्थिक विकास से ही प्रभावित होता रहा है। मनुष्य के आर्थिक जीवन का मूल आधार कृषि, पशुपालन और व्यापार रहा है। सभ्यता व संस्कृति के अति प्रारंभिक चरण से ही मनुष्य ने जीविकोपार्जन के विभिन्न साधनों की खोज शुरु कर दी थी। आदिमानव अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये शिकार खेलता था। जैसे–जैसे मनुष्य विकास करता गया उसने पशुपालन को आर्थिक जीवन का आधार बनाया। तत्पश्चात अन्य साधनों की खोज की। सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास होने पर धन प्राप्ति के लिये कृषि, उद्योग, वाणिज्य और व्यवसाय का भी प्रयोग होने लगा। व्यक्ति का भौतिक और लौकिक सुख उसके आर्थिक विकास से प्रभावित होता रहा है। धन प्राप्ति के लिये मनुष्य विभिन्न प्रयोग करता है व योजनाएँ बनाता है। इन प्रयत्नों और योजनाओं से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।